रोज़े-महशर

रोज़े-महशर

roz-e-mahshar

Judgment Day
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

मौत नागुज़ीर है

इस दुनिया में इनसान तरह तरह की मुश्किलात और मुसीबतों में फंसा रहता है। लेकिन अगर वह इनसे बच भी जाए तो भी एक बात से नहीं बचेगा। आख़िर कार उसे मरना ही है। यह एक आलमगीर हक़ीक़त है। तक़रीबन हर रोज़ कोई न कोई अज़ीज़ दुनिया को आख़री सलाम कहता है।

अजीब बात यह है कि आम तौर पर इनसान मरने का ख़याल तक नहीं करता। जिसका एक पाँव क़ब्र में लटका हो वह भी इस पर ज़्यादा तवज्जुह नहीं देता। अगर मरने का ख़याल आ भी जाए तो वह ख़ौफ़ज़दा हो जाता है।

अदालत नागुज़ीर है

लेकिन हम एक और बात से भी गुरेज़ नहीं कर सकते। यह कि मौत के बाद हर इनसान की अदालत की जाएगी।

इंजील जलील अदालत के बारे में फ़रमाती है,

> ईसा वही है जिसे अल्लाह ने ज़िंदों और मुर्दों पर मुंसिफ़ मुक़र्रर किया है। (आमाल 10:42)

> अब ख़ुदा हर जगह के लोगों को तौबा का हुक्म देता है। क्योंकि उसने एक दिन मुक़र्रर किया है जब वह इनसाफ़ से दुनिया की अदालत करेगा। और वह यह अदालत एक शख़्स की मारिफ़त करेगा जिसको वह मुतअय्यिन कर चुका है और जिसकी तसदीक़ उसने इससे की है कि उसने उसे मुर्दों में से ज़िंदा कर दिया है। (आमाल 17:30-31)

अदालत से बचने का रास्ता

हज़रत ईसा इस दुनिया में दुबारा आएँगे। उनकी आमदे-सानी की अलामतें आजकल मौजूद हैं। लेकिन इंजील जलील यह भी

फ़रमाती है कि हुज़ूर पहली मरतबा दुनिया में इसलिए तशरीफ़ लाए कि इनसान के गुनाहों का वाहिद कफ़्फ़ारा दें।

> आप जानते हैं कि अल्लाह ने ईसा नासरी को रूहुल-क़ुद्स और क़ुव्वत से मसह किया और कि इस पर उसने जगह जगह जाकर नेक काम किया और इबलीस के दबे हुए तमाम लोगों को शिफ़ा दी, क्योंकि अल्लाह उसके साथ था।
> (इंजील मुक़द्दस , आमाल 10:38)

बाद में

> लोगों ने उसे लकड़ी पर लटकाकर क़त्ल कर दिया लेकिन अल्लाह ने तीसरे दिन उसे मुर्दों में से ज़िंदा किया और उसे लोगों पर ज़ाहिर किया।
> (आमाल 10:39-40)

लेकिन ख़ुशख़बरी यह है कि

> तमाम नबी उसकी गवाही देते हैं कि जो भी उस पर ईमान लाए उसे उसके नाम के वसीले से गुनाहों की माफ़ी मिल जाएगी।
> (इंजील मुक़द्दस, आमाल 10:43)

अज़ीज़ क़ारी! क्या आप सुकून से अदालत के दिन का इंतज़ार कर रहे हैं? याद रहे कि गुनाह एक हैबतनाक चीज़ है। अगर आपने माफ़ी हासिल नहीं की तो गुनाह ज़रूर आपको जहन्नुम में डालने का बाइस होगा। सिवाए मसीह की कफ़्फ़ाराबख़्श मौत के आपके दिल को किसी और से हक़ीक़ी तसल्ली और इतमीनान हासिल नहीं हो सकता। इंजील जलील फ़रमाती है,

> अब वह [यानी हज़रत ईसा] ज़मानों के इख़्तिताम पर एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आपको क़ुरबान करने से गुनाह को दूर करे। एक बार मरना और अल्लाह की अदालत में हाज़िर होना हर इनसान के लिए मुक़र्रर है। इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के गुनाहों को उठाकर ले जाने के लिए क़ुरबान किया गया। दूसरी बार जब वह ज़ाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें नजात देने के लिए जो शिद्दत से उसका इंतज़ार कर रहे हैं। (इबरानियों 9:26-28)